एक जीवनी
उर्फ
इडली भारतीय व्यंजन नहीं है

डी. बालसुब्रमण्यन

डॉ. के. तम्मु अचया

5 सितम्बर के दिन भारत ने अपना एक विशिष्ट वैज्ञानिक खो दिया। के. तम्मु अचया खाद्य व पोषण वैज्ञानिक थे। 79 वर्ष पहले तमिलनाडु में कोलेगल में एक कोर्गी परिवार में जन्मे अचया सचमुच एक अध्येता थे; तेल व वसा के विशेषज्ञ, इतिहासकार, लेखक, संगीत विश्लेषक और फोटोग्राफर के रूप में आप प्रतिष्ठित रहे।

वैसे तो डॉ. अचया कई चीज़ों के लिए मशहूर थे। किन्तु वैज्ञानिकों, इतिहासकारों व भोजन विशेषज्ञों के बीच उनकी किताबें खासी लोकप्रिय थीं। *'कॉटनसीड केमेस्ट्री एण्ड टेक्नॉलॉजी'*, *'एवरीडे इण्डियन प्रोसेस्ड फूड्स'*, *'ऑइलसीड्स एण्ड ऑइल मिलिंग इन इण्डिया-ए कल्चरल एण्ड हिस्टॉरिकल सर्वे'* और *'घानी-दी ट्रेडिशनल ऑइल मिल ऑफ इंडिया'* जैसी किताबें तो विशेषज्ञों के लिए थीं मगर *'योर फूड एण्ड यू'* (आप और आपका भोजन), *'इण्डियन फूडः ए हिस्टॉरिकल कम्पेनियन'* (भारतीय भोजन - एक ऐतिहासिक साथी), *'ए हिस्टॉरिकल डिक्शनरी ऑफ इण्डियन फूड्स'* (भारतीय भोजन का ऐतिहासिक शब्दकोश) और *'दी स्टोरी ऑफ अवर फूड'* (हमारे भोजन की कहानी) आदि सामान्य पाठकों के लिए थीं। इन किताबों का असर उल्लेखनीय रहा है। मसलन *'इण्डियन फूड - ए हिस्टॉरिकल कम्पेनियन'* का हवाला कम से कम 650 शोध पत्रों में आता है और *'ए हिस्टॉरिकल डिक्शनरी ऑफ इण्डियन फूड्स'* इसी का अपेक्षाकृत अधिक सुविधाजनक संस्करण है। और यदि आप अपने किसी मित्र को अच्छा तोहफा देना चाहें तो मेरी मानिए - *'दी स्टोरी ऑफ अवर फूड'* दे डालिए। यह जानकारी और मज़े दोनों का भंडार है।

डॉ. अचया की सबसे प्रभावशाली चीज़ उनकी सरलता और दोस्ताना रवैया थी। आपकी किसी गलती पर वे आपको ज़िन्दा भून डालेंगे और वह भी इस अदा से कि आप आहत न हों। मैंने एक बार अपने एक लेख में भारत में मिर्च के आगमन को लेकर सुझाव दिया था कि शायद मार्को पोलो ने यह काम किया था। डॉ. अचया ने मुझे एक सुन्दर पत्र लिखा, जो संग्रहणीय भी था। पत्र में उन्होंने लिखा था : आप शायद कभी अपने उम्दा लेखों का संग्रह प्रकाशित करेंगे। उस समय शायद आप मार्को पोलो द्वारा मिर्च को भारत लाए जाने की बात को छोड़ने पर भी विचार करेंगे क्योंकि मार्को पोलो का नई दुनिया के साथ कोई संपर्क नहीं हुआ था और इस सम्पर्क के बगैर उनके लिए मिर्च को भारत लाना सम्भव नहीं हो सकता था।

राम-सीता का भोजन

इसी सहजता, गरिमा और ज्ञान के साथ उन्होंने कई मिथकों व अपुष्ट मान्यताओं को ध्वस्त किया था। इसके लिए वे काफी गहनता से अपनी बात रखते थे और मूल साहित्य के उपयुक्त उद्धरण भी प्रस्तुत करते थे। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि यह काम वे इतनी विनम्रता